सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• अदिति रुसिया

सृजक-सृजन-समीक्षा

अदिति रूसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति के में प्रस्तुत

"सृजक"

अदिति रूसिया का परिचय

नाम : अदिति रूसिया

जन्म : १६/४/७२

जन्मस्थान: जबलपुर

शिक्षा: बी॰ए(पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)

पिता : स्व. श्री सतीश चन्द गुप्ता

माता: श्रीमती मंजुला गुप्ता

पति : श्री संजय रूसिया

बेटा: कार्तिक रूसिया

बेटी: कावेरी रूसिया

कार्यक्षेत्र : गृहणी

ईमेल: aditirusia@gmail.com

लेखन का उद्देश्य: अपने मनोविचारों को लोगों तक पहुँचाना ।

प्रकाशन: जीवन की धूप-छाँव (काव्य संग्रह)

विचार मंथन (साझा संकलन), कथासेतु (साझा संकलन)

Womenआवाज़ (नारी से नारी तक)

अन्तरा-शब्दशक्ति एवं लोकजंग में अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

सम्मान- अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान

लेखन की प्रेरणा: परिवेश, परिवारऔर अंतरा परिवार।

आत्मकथ्य

बरस पैतालिस की हुई
जब माह था अप्रैल वो
कहा सखी प्रीति ने मुझसे
जोड़ती अंतरा से तुझको
जोड़ दिया फिर उसने मुझको
डरते डरते कलम
उठा ली हाथ में
मैं चल पड़ी नई राह पर
प्रथम लिखा जो गद्य मैंने
दिन गुरुवार बेटे के वो नाम था
हौसला दिया सभी ने
मुझे लगा हाँ मैं भी लिख सकती हूँ
पापा नहीं पर आशीर्वाद उनका साथ था
माँ ने भरी एक नई उमंग
और हमसफ़र का साथ था
बच्चों ने भी दिया हौसला
प्रीति का भी साथ था
होने वाले है पच्चीस
बरस अब कुछ महीनों में शादी के
एक नए रूप में हुआ मेरे पैतालीसवे
बरस का आग़ाज़ था
हसरतें थी जो अधूरी
दिल की मुराद आज हुई है पूरी
तहेदिल से शुक्रिया करती हूँ मैं।

"सृजक का सृजन"

वृंदावन का कृष्ण कन्हाई

वृंदावन का कृष्ण कन्हाई
बस गया मेरे अंतर्मन में
छैल छबीला नंदलाल
बस गया मेरे अंतर्मन में
मुरली की मधुर तान सुना
मोहे वो सब के तन मन को
चुपके चुपके माखन खाए
रोक न पाए गोप ग्वाल सब
बरसाने की राधा संग जब
वृंदावन में रास रचाए
देखत रह जाए सब
शिव शंभु भी रुक न पाए
बन गोपी वो रास रचाने
आ जाए गौरा संग तब
मथुरा में जाके कंस मारे
कुब्ज़ा के भी भाग सँवारे
गोकुल में क़ालिया नाग वो मारे
गिरिराज में जाए गवोवर्धन उठाए
वृंदावन का कृष्ण कन्हाई
बस गया मेरे अंतर्मन में
छैल छबीला नंदलाल
बस गया मेरे अंतर्मन में...

पिया तेरा साथ

जीवन में पिया तेरा साथ रहे
हाँथों में पिया तेरा हाँथ रहे
निभाएँगे सात फेरों के सातों वचन
खाई हमने जो मिलकर सारी कसम
धर्म पहला हमारा सेवा माता पिता की
मिल करेंगे सेवा उनकी हम
उन्हें देंगे ख़ुशियाँ सारे जहाँ की हम
जीवन ...
धर्म दूजा हमारा गो रक्षा करना
मिल करेंगे रक्षा उनकी हम
उन्हें मारने न देंगे ये खाते कसम
जीवन...
धर्म तीजा हमारा वृक्षों को बचाना
मिल करेंगे रक्षा वृक्षों की हम
उन्हें काटने न देंगे किसी को हम
जीवन ...
धर्म चौथा हमारा बेटी को बचाना
मिल करेंगे रक्षा हर बेटी की हम
उन्हें कोख में मारने न देंगे हम
जीवन ...
धर्म पाँचवा हमारा सबको साक्षर बनाना
मिल साक्षर सबको बनाएँगे हम
उन्हें साक्षर बनाके ही लेंगे दम
जीवन ...
धर्म छठा हमारा आतंक मिटाना
मिल आतंकियों को बाहर भगाएँगे हम
उन्हें देश में रहने न अब देंगे खाते क़सम
जीवन ...
धर्म सातवाँ हमारा मातृभाषा को बचाना
मिल कर हिंदी का प्रचार प्रसार करेंगे हम
हम खाते क़सम अंग्रेज़ी को खदेड़ बाहर करेंगे हम
जीवन....

सागर

सुनो ! तुम इतने अच्छे क्यों हो
क्यों करते हो इतना प्यार सबसे
कभी नाराज़ नहीं होते हो किसी पे
चाहे कितनी भी कठिन परिस्थिति हो
हँसते मुस्कुराते प्यार लुटाते फिरते हो
जैसे सागर
कभी किसी से कुछ लेता नहीं सदा
कुछ न कुछ देता ही रहता है
बस तुम भी उसी सागर की तरह हो
हमेशा देना ही तो सीखा है
समंदर सा विशाल हृदय लिए
किसी की बात का कभी बुरा ही नहीं मानते
इतनी शक्ति कहा से लाते हो
चाहे कोई लाख बुरा करे तुम्हारा
पर तुम सारे रिश्तों को
अपने अंदर समेटे फिरते हो
शायद इसीलिए
हर कोई तुम्हारे जैसा बनना चाहता है
पर इतना आँसा कहाँ तुम्हारी तरह
बन पाना
क्योंकि तुम तुम ही हो
जैसे समंदर का कोई कुछ नहीं कर सकता
वैसे ही तुम चाहे कुछ भी हो
पर अपने प्यार की अविरल धारा
सदा बहाते ही रहोगे,...प्यार लुटाते ही रहोगे ,..

सुख

सुख क्या है ?
इसकी कोई परिभाषा नहीं
क्योंकि हम चाहे तो हर
छोटे से छोटे पल को ख़ुशियों
से भर सकते है हर ग़म में
अपना सुख ढूंढ सकते है
ये जीवन का वो छोटा सा
एक पल है जिस पल में
हम सारे जहाँ की ख़ुशियाँ
अपने आँचल में समेट लेते है
उस एक पल के लिए हम
अपनी सारी दुःख तकलीफ़
भूल कर सिर्फ़ उस पल को
जीवंत बनाने में लग जाते हैं।

मैं उदास हूँ

हाँ !
मैं उदास हूँ
बहुत उदास हूँ
बच्चे जो चले गए
घर से मीलों दूर,...
रह गए अकेले हम दोनों
न उनके खाने का ठिकाना
न ही सोने का ठिकाना
एक अपनी पढाई में मस्त
तो दूसरा अपनी नौकरी में मस्त
और यहाँ हम उनके लिए चिंतित
क्योंकि बच्चे जब ज़्यादा दिनों
तक साथ रह कर जाते है
तो उनका जाना बहुत खलता है
वो तो अपनी दुनिया में रम जाते है
रह जाते है तो हम अकेले उदास
उनके अगली बार आने के इंतज़ारमें,..

उलझन

मैं अपनी ही उलझनों में
कुछ इस तरह उलझी
कि समझ ही नहीं आया
ये वक़्त कब मेरे हाथ से
रेत की तरह फिसलता रहा
कभी परिवार तो कभी
बच्चों में ही उलझ कर रह गई
कभी अपने लिए समय
ही नहीं निकाल पाई मैं
अब जब सोचती हूँ तो
लगता है क्या अच्छा न होता अगर
कुछ वक़्त ख़ुद को दिया होता
पर अब सोचती हूँ क्यों न
जो थोड़ा वक़्त बचा है
उसे फिर एक नई उमंग
एक नई तरंग के साथ
अपने हमसफ़र के साथ
हँसते गुनगुनाते बिताया जाए
जो बीत गया वो वक़्त
वापस तो नहीं आ सकता
पर जो वक़्त है उसे तो
उलझनों को परे रख
एक नई शुरूवात कर
एक नए अन्दाज़ से जिया जा सकता है ,...

काँटे

सुनो!
काँटों से दोस्ती करोगे
तो फ़ायदा ही होगा
क्योंकि काँटे आपको
हर वक़्त एहसास कराते रहेंगे कि
जीवन में सुख है तो दुःख भी है,..
अच्छे दोस्त है तो दुश्मन भी,
जिसने काँटों से दोस्ती की
वो सबसे ज़्यादा सुखी
क्योंकि
कामयाबी ऐसे ही नहीं मिलती साहब ,
काँटों भरी राह पर
चलना पड़ता है
तब जा कर
मंज़िल मिलती है
क्योंकि
कामयाब होते राह में काँटे ही
तो बिछाए जाते है
लोगों को दूसरों की
कामयाबी बर्दाश्त
नहीं होती
फिर राह में रोड़े अटकाते है,..
जो सिर्फ़
फूलों से दोस्ती करते है
उन्हें मुश्किलों का सामान
करना पड़ता है
पर
जिसने स्वयं काँटों भरी राह चुन ली हो
उसकी राह में कोई लाख काँटे बिछाए
वो तो उसे भी फ़ूल समझ आराम से
कँटीली राह को पार कर जाता है
इसीलिए
जिसने काँटों से भरा जीवन जिया है
काँटों से दोस्ती की है
शायद वो आज ज़्यादा सुखी है
बनिस्बत उसके
जिसने फूलों से दोस्ती की है
क्योंकि
गुलाब भी तो काँटों में ही खिलता है
और
किसी मेहरुन्निसा के सिर का
ताज बनता है,...

सृजन की समीक्षा

1.

हार्दिक **बधाई** अदिति जी ।

अंतरा में केंद्रीय रचनाकार के रूप में प्रस्तुत किया जाना ही अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। अंतरा का यह कदम लिखने और पढ़ने वाले के लिए सुखद अनुभूति लेकर आता है, हर रविवार।

अब आपकी रचनाओं की बात - अदिति जी ।

आत्मकथ्य में आपने अपने भावों का जो चित्रण किया है वह सहृदयी विशालता का परिचय देता है , आज कल यह कम ही दिखती है।

वृन्दावन का कृष्ण कन्हाई धार्मिक आस्था से परिपूर्ण है।

" पिया तेरा साथ " आपकी सबसे अलग और प्रभावी संदेश देती रचना है। इसका यदि व्यापक प्रसार हुआ तो यह पथप्रदर्शक का काम करेगी।

सागर , सुख, मैं उदास हूँ , उलझन और कांटे । इन रचनाओं में कसावट की जरूरत मुझे लगती है । ये रचनाएँ भी व्यापक संदेश देती हुई आपके मनोभावों को व्यक्त करने में सफल रही हैं । पुनः **बधाई** । आपका प्रेरक लेखन समाज को निरंतर दिशा दे सके ,यही शुभकामनाएं।

देवेन्द्र सोनी, इटारसी

2.

प्रिय अदिति जी,

रविवारीय केंद्रीय रचना विशेषांक के अंतर्गत "सप्ताह का कवि "के रूप में आपकी प्रस्तुति के लिए बहुत -बहुत **बधाई**, किसी रचनाकार के लिए अंतरा में इस तरह की प्रस्तुति, एक बड़ी उपलब्धि है, सम्मान का विषय है |आपकी रचनाओं में सहजता, सौंदर्य और और अपने-पन की मिठास है आपकी रचना कांटे प्रेरणादायक है।

दीपाली शर्मा इटारसी.

3.

अदिति रूसिया जी का जीवन परिचय और रचनाएँ आज पढ़ने को मिली । वाह ! अंतरा परिवार और परिवार का साथ का वर्णन आपने रचना के माध्यम से बखूबी दिया है । दूसरी रचना वृंदावन का कृष्ण कन्हाई के माध्यम से ईश्वर को याद किया और ईश्वर के प्रति अपनी भावनाएं वयक्त करनें में सफल प्रतीत होती हैं । पिया तेरा साथ बहुत अच्छी रचना लगी हमें । सातों वचन को सेवा धर्म के रूप में पिरो दिया जिसमें माता-पिता की सेवा, गौ रक्षा, वृक्षों को बचाना, बेटी को बचाना, साक्षर बनाना, आतंक मिटाना, मातृभाषा का प्रचार प्रसार को माध्यम बना लिया । वाह आपके सातों धर्म बहुत ही सार्थक कदम के रूप में है ।
सागर कविता के माध्यम से सीख प्रदान करने अच्छी कोशिश , सुख की परिभाषा को लिखने का प्रयास। मैं उदास हूँ- सच बच्चे कब बड़े हो जाते हैं जिनकी दूरी हमें सहनी पड़ती है । उनकी चिंता अलग होती है । उलझन सही है अदिति जी, उलझनों के बीच वक्त फिसलता रहा बंद मुट्ठी में रेत के समान और पता ही नहीं चला ।
काटों से दोस्ती एक विषय से अपरिचित कराया है आपने ।
कुल मिलाकर आपकी रचनाएँ प्रभावशील है पाठक को आसानी से समझ आने वाली है । बहुत-बहुत शुभकामनाएँ आगे के साहित्यिक सफर के लिए !

अनिता मंदिलवार सपना
अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

4.

अदिति रूसिया जी का आत्म कथ्य इस बात का गवाह है,
कि नई शुरुआत के लिए कभी देर नही होती ।
और यदि परिस्थितियाँ और परिवार साथ हों तो अल्प समय में भी लेखन ,अपनी दिशा पकड़ सकता है ।
वृंदावन का कृष्ण कन्हाई:-

आराध्य को समर्पित खूबसूरत पँक्तियाँ हैं ।
कृष्ण के दुनियावी कर्मों का लेखा जोखा
पिया तेरा साथ:- सात फेरों पर लिए गये वचनों का नूतन आख्यान है ।
मात्र गृहस्थ पालन के वचन न होकर वो व्यक्तिगत से समष्टिगत हो गये ।
वर्तमान परिवेश में बेहद मौजूँ ।
गो रक्षा, प्रकृति के सन्तुलन की चिंता,
बेटी बचाना ,साक्षरता,
आतंक पर नकेल,
और मातृ भाषा के प्रचार प्रसार का वचन
अद्भुत और नूतन कॉन्सेप्ट
सागर:- अच्छा होना बेहद मुश्किल है ।
जब लोग मात्र खारेपन के चलते ,
समन्दर की तमाम अच्छाइयाँ दर किनार करते हैं ।
अदिति जी उसमें सब सकारात्मक ढूँढ लेती हैं ।
सुख :- इसकी कोई नियत परिभाषा ही नही है ।
बस एक लम्हे को शिद्दत से और भरपूर जी लेना ही तो सुख है ।
मैं उदास हूँ :-एक माँ के मन की छलकती पीड़ा की आवाज़ है ,दूर जा बसे बच्चे स्मृतियों से दूर कब होते हैं ।
उलझन :-विगत को दरकिनार कर अपने लिए जीने का कुछ सामान और पल तलाशती पँक्तियाँ ,
देर नही हुई अभी
उलझनों से उबरा जा सकता है ।
काँटे :-संकलन की सबसे खूबसूरत रचना है जो जीवन की राहों में कठिनाईयों का आकलन कर ,
उनका सकारात्मक मूल्य बताती है ।
कँटीली पगडंडियों से होकर गुज़रता सफ़र ,
मंज़िलों पर

असीम सुख देता है ।
यही केंद्रीय भाव समेटे खूबसूरत रचना ।
कुछ टँकण त्रुटियाँ है ।
संज्ञान लें ।
भावों का भरपूर खजाना अदिति जी के पास है ।
उम्मीद करता हूँ इस यात्रा में ,
और भी गहन भाव ,शब्द बनकर उभरेंगें ।
मंगलकामनाएं ।
जय हो,विजय हो

ब्रजेश शर्मा विफल
झाँसी

5.

शुभकामनाएं बढ़ते कदमों की"
अपनी इस प्यारी सखि को जब अंतरा परिवार से जोड़ा तब मेरे खुद के सपने अधर में लटके थे। एक-एक दिन विषयों पर शब्दों की कारीगरी रचते-रचते शुरू हुआ एक संपादक और एक मित्र का रिश्ता । एक रचनाकार के नज़रिए से अदिति जी को यही कहना चाहूंगी कि भावपक्ष बहुत ही सुदृढ़ है लेकिन शब्द और शिल्प में कसावट अभी बाकी है। पूरा विश्वास है कि जैसे जैसे लेखन आगे बढ़ेगा समय के साथ निखार आता जाएगा।
ढेर सारी **बधाई** एवं शुभकामनाओं साथ ही ये दुआ कि इस जीवन की तरह ही आपका साहित्यिक जीवन भी प्रगतिशील बने।

डॉ. प्रीति सुराना
वारासिवनी (मप्र)

6.

सर्वप्रथम बहुत बहुत **बधाई** अदिति जी अन्तरा-शब्दशक्ति के माध्यम से सृजन से जुड़कर इस पड़ाव तक पहुंचने के लिए। आपका कवितामय आत्मकथ्य बेहद प्रभावशाली है।

1* वृंदावन का कृष्ण कन्हाई- मेरे दिल के बहुत करीब है, मेरे इष्ट भी भगवान कृष्ण ही हैं। आपकी कविता मुझे मेरी ही भावना लगी।

2* पिया तेरा साथ- बहुत शानदार सृजन है, पिया संग मिलकर आप सुंदर सपने सजाती हैं, और आप दोनों हमकदम होकर उनके लिए प्रयास भी करते हैं। बहुत बहुत **बधाई**।

3* सागर - आपने अपने पिया की तुलना सागर की विशाल हृदयता से की है। खूबसूरत।

4* सुख- सुंदर रचना।

5* मैं उदास हूं - मैं भी उसी दौर से गुज़र रही हूं सखी। अंतरा ने ही संभाला है। शुक्रिया अंतरा , हमारे अंदर के कवित्व को बाहर लाने के लिए ।

6* उलझन- हर औरत की दास्तान।

7* कांटे - बहुत सुंदर रचना।

आपके भविष्य के लिए अशेष शुभकामनाएं।

पिंकी परुथी "अनामिका"

बारां कोटा राजस्थान

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com